साझेदारी के दुख

घने जंगल से हो कर गुजरती वह पगडंडी आगे चल कर थोड़ी चौड़ी हो गई। दोपहर की चिलमिलाती धूप जोनाथन के सिर को जला रही थी तभी उसे एक छोटी सी झील नज़र आई। वह कुछ पानी पी कर खुद को थोड़ा ताज़ादम करने की कोशिश कर रहा था कि उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "मैं अगर तुम्हारी जगह होता तो यह पानी नहीं पीता।"

जोनाथन ने मुड़ कर देखा तो उसे किनारे पर एक बूढ़ा आदमी नज़र आया। वह लकड़ी के तख्ते पर बैठा छोटी-छोटी मछलियां साफ कर रहा था। उसके पीछे एक टोकरी थी और मछली पकड़ने के तीन कांटे पानी में डले थे। जोनाथन ने विनम्रता से पूछा, कैसा चल रहा है मछलियां पकड़ने का काम?

उस आदमी ने बिना सिर ऊपर उठाए थोड़ा चिड़चिड़ी सी आवाज़ में जवाब दिया, " बिल्कुल अच्छा नही, आज केवल ये छोटी-छोटी मछलियां ही हाथ लगी हैं मेरे। उसने मछली को पतले टुकड़ों में काट कर पास जल रही आग के ऊपर रखे तवे पर डाल दिया। पक रही मछली की खुशबू से जोनाथन के मुंह में पानी आ गया। पीली धारियों वाली जिस बिल्ली का उसने पीछा किया था वह भी वहीं बैठी मछली साफ करने में बचे टुकड़ों को खाने में जुटी थी।

जोनाथन खुद को काफी अच्छा मछली पकड़ने वाला समझता था। उसने उस आदमी से पूछा, "आप मछली के चारे के लिए क्या इस्तेमाल करते हैं?" बूढ़े आदमी ने बड़े ध्यान से उसकी ओर देखा और कहा, मेरे चारे में कोई खराबी नहीं है, बच्चे। इस झील में जो सबसे अच्छा बचा है वही मैंने पकड़ा है।

जोनाथन को उसकी बातचीत से लग गया था कि फिलहाल उसका ज़्यादा बात करना ठीक नहीं होगा। उसने सोचा कुछ देर चुप रह कर उस आदमी की बातों से यहां के बारे में कुछ जानकारी लेने की कोशिश करेगा। थोड़ी देर बाद उस आदमी ने उसे थोड़ी मछली और रोटी खाने को दी। जोनाथन ने, जो काफी देर से भूखा था, बहुत रस ले कर वह खाना खाया। हालांकि उसे यह सोच कर बुरा लग रहा था कि उसने बूढ़े के थोड़े से खाने में से भी खुद खा लिया। खाना खत्म करने के बाद भी जोनाथन चुप ही रहा, कुछ देर बाद बूढ़े ने ही बातचीत शुरू की।

"सालों पहले इस तालाब में बहुत बड़ी मछलियां होती थी पकड़ने के लिए”, उस आदमी ने गहरी सांस भरते हुए कहा। " लेकिन वे सब पकड़ ली गईं, अब तो बस ये छोटी मछलियां ही बची हैं इस झील में।"

"लेकिन ये छोटी मछलियां भी तो बड़ी हो जाएंगी, हैं ना? जोनाथन ने पूछा। उसने किनारे के कम गहरे पानी वाले हिस्से में उगी हरी घास पर नज़र डाली जहां बहुत सी मछलियां छिपी हो सकती थीं।

"नहीं। लोग सारी मछलियां पकड़ लेते हैं, बिल्कुल छोटी मछलियां भी। इतना ही नहीं लोग झील में कूड़ा भी डाल देते हैं। झील के उस किनारे पर जमा हुआ गंदा कीचड़ देख रहे हो तुम?

जोनाथन ने हैरान होते हुए पूछा," लेकिन लोग तुम्हारी मछलियां क्यों पकड़ेंगे और वे तुम्हारी झील में कूड़ा कैसे डाल सकते हैं?

"अरे नहीं," वह आदमी बोला, " यह मेरी झील नहीं है। जंगलों और तालाबों की तरह यह झील भी सबके लिए यानि सार्वजनिक है।

ये मछलियां सबकी हैं......जोनाथन ने थोड़ा रूक कर बोला, " मेरी भी?"
उसे लगा कि अगर इन मछलियों पर उसका भी अधिकार है तो उसे बूढ़े आदमी के खाने से हिस्सा लेने पर दुखी नहीं होना चाहिए।

"नहीं, उस आदमी ने जवाब दिया, " दरअसल जो चीज़ सबकी होती है उस पर किसी का भी हक नहीं होता। जब मछली मेरे कांटे में फंस जाए तब ही वह मेरी होगी।"

मैं कुछ समझा नहीं, जोनाथन बोला। उसने बूढ़े की बात को दोहराया," मछलियां सबकी हैं यानि इन पर किसी का भी हक नहीं है, अगर कोई मछली आपके कांटे में फंस जाए तभी वह आपकी है, इसका क्या मतलब है? लेकिन क्या आप मछलियों की देखभाल के लिए कुछ करते हैं या उन्हें बढ़ने में मदद करते हैं?

"बिल्कुल नहीं!" भला मैं मछलियों की देखभाल क्यों करूं जबकि कोई भी किसी भी समय आ कर उन्हें पकड़ सकता है। मछलियों की देखभाल मैं करूं और उन्हें कोई और पकड़ कर ले जाए और ऊपर से झील को गंदा भी कर जाए तो मेरी मेहनत तो सारी बरबाद हो जाएगी।

झील के पानी पर एक उदास नज़र डालते हुए वह बूढ़ा मछुआरा बोला," काश यह झील सचमुच मेरी होती। तब मैं मछलियों की देखभाल करने की हर कोशिश करता। मैं झील का ध्यान इस तरह रखता जैसे अगली घाटी में रहने वाला पशुपालक अपने बाड़े का रखता है। मैं सबसे बढ़िया किस्म की मजबूत और मोटी मछलियां पालता, तब तुम देखते कि अगर कोई मेरी मछलियां चुराना चाहता या तालाब में गंदगी डालना चाहता तो मैं उसका कितना बुरा हाल करता।

"अभी इस ताल की रखरखाव देखभाल कौन करता है," जोनाथन ने उसे टोकते हुए पूछा।

उस बूढ़े आदमी के झुर्रीदार चेहरे पर कठोर भाव आ गए," इसे अधिकारियों की एक परिषद देखती है। हर चार साल में परिषद के लिए अधिकारी चुने जाते हैं। यह परिषद एक मैनेजर को नियुक्त करती है जिसे हमारे टैक्स के पैसों में से ही वेतन दिया जाता है। इस मैनेजर का काम यह देखना है कि तालाब से बहुत ज़्यादा मछली न पकडी जाएं और कोई उसमें कूड़ा वगैरह न डाले। लेकिन मज़ेदार बात यह है कि परिषद अधिकारियों के दोस्त जब चाहे जितनी मछली पकङ सकते है और मनचाहे ढंग से उसमें गंदगी फैला सकते हैं।"

वे दोनों तालाब के किनारे बैठे पानी में हवा से बन रही तरंगों को देख रहे थे। जोनाथन ने गौर किया कि पीली बिल्ली सीधी तन कर बैठी उसकी प्लेट पर रखे मछली के सिर को घूर रही थी। जोनाथन ने मछली का सिर बिल्ली की ओर उछाल दिया जिससे उसने एक ही पंजे से बडी सफाई से पकड़ लिया। यह बिल्ली खासी मजबूत दिखाई देती थी, उसका एक कान शायद किसी पुरानी लड़ाई कटा था।

जोनाथन बूढ़े मछुआरे की कहानी के बारे में ही सोच रहा था, उसने पूछा, क्या तालाब का रखरखाव ठीक तरीके से होता है?

"तुम खुद ही देख लो," भुनभुनाते हुए बूढ़ा बोला," मैंने जैसी छोटी मछलियां पकडी थी उन्हें देख कर तुम्हें क्या लगता है? ऐसा लगता है जैसे-जैसे मैनेजर का वेतन बढ़ रहा है वैसे-वैसे मछलियां छोटी होती जा रही हैं।

विचार-विमर्श

◦ लोग ऐसी चीज़ों की देखभाल कैसे करते हैं जिस पर सबका साझा अधिकार होता है?

◦ तालाब और मछलियों पर वास्तव में किसका अधिकार है?
◦ अगर तालाब उस मछुआरे का होता तो क्या वह उसमें कूड़ा डालता?
◦ लोगों के व्यवहार में क्या फ़र्क पड़ता अगर वह तालाब मछुआरे का होता?
◦ चीज़ों पर सार्वजनिक अधिकार से किस को फायदा होता है?
◦ इसके लिए उदाहरण कौन से हो सकते हैं?
◦ इस मामले में न्याय संबंधी कौन से मुद्दे शामिल हैं?

व्याख्या

यह अध्याय साझेदारी के दुखद परिणामों पर रोशनी डालने की एक कोशिश है। साझेदारी या सार्वजनिक अधिकार उसे कहते हैं जब चीज़ों पर सरकार का अधिकार होता है जिसका मकसद पूरी जनता को लाभ पहुंचाना होता है।

लेकिन साझेदारी की समस्या यह है कि सबका अधिकार होने के नाते इसे सभी को फायदा पहुंचाना चाहिए था लेकिन ऐसा होता नहीं। दरअसल सभी सोचते हैं क्योंकि चीज़ों पर उनका हक है इसलिए जिसके हाथ जैसे लगे उसका ज़्यादा से ज़्यादा फायदा उठाने की कोशिश करता है। उनकी कोशिश रहती है कि दूसरों से पहले वह चीज़ का पूरा फायदा उठा लें।ऐसे में होता है कि कोई भी चीज़ या सुविधा पूरी तरह से विकसित होने से पहले ही बरबाद कर दी जाती है। उस पर दोहरी मार यह कि क्योंकि उस पर किसी एक का हक नहीं है तो कोई भी उसे संभालने या उसकी देखभाल की जिम्मेदारी अपनी नहीं समझता।

वास्तव ने दुनिया भर की सरकारों ने प्राकृतिक संसाधनों को अपने अधिकार में ले कर पर्यावरण को बहुत ही गंभीर नुकसान पहुंचाया है। दूर-दूर तक फैली जमीन, पानी के विशालकाय भंडार, समुद्री तटीय इलाके यह सब सरकारी अधिकार के तहत आते हैं। इन पर सरकार का अधिकार होने से आम जनता इनके प्रति कोई जिम्मेदारी का भाव नहीं रखती, इसलिए कोई भी इन प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए आगे नहीं आता।

बचाना तो दूर रहा, सरकार चलाने वाले राजनेताओं की छत्रछाया में रहने वाले लोग मनमाने ढंग से इन संसाधनों का का उपयोग व्यक्तिगत फायदे के लिए करते हैं जबकि कहने को यह सब जनता का होता है।

जमीनः यह सार्वजनिक अधिकारों का ही दुखद परिणाम है कि लोग अपनी जगहों का इस्तेमाल करने की बजाय घर का कूड़ा-करवट सार्वजनिक मैदानों पर डालते हैं। यही वजह है कि सार्वजनिक जगहों पर लगे फल पकने से पहले ही तोड़ लिए जाते हैं। अगर आप हवाईजहाज से सफर कर रहे हों तो नीचे नज़र डाल कर आसानी से अंदाज़ा लगा सकते हैं कि लोग अपनी निजी जगहों का बेहतर इस्तेमाल कर अच्छा उत्पादन करते हैं जबकि सरकारी जमीन जानवरों की चरागाह या कूड़ेदान बनी रहती है।

जीव व वनस्पतिः साझेदारी के सिद्धांत पर यह समझना आसान है कि जिन गाय या पेड़-पौधों को लोग अपनी निजी जगहों पर पालते या लगाते हैं वे गाय या वनस्पति जातियां लुप्त होने से बची रहती हैं जबकि सार्वजनिक भैंस प्रजातियां और वनस्पतियों पर समाप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

पर्यावरण और प्रदूषणः प्रदूषण व बरबादी के सबसे खतरनाक उदाहरण तो सरकारों के अधिकार वाली सार्वजनिक जगहों पर मिलते हैं। सरकारी नीतियों की वजह से ही बडे पैमाने पर पानी व हवा को प्रदूषित कर रही गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है। यह बात सामने आई है कि उन जगहों पर प्रदूषण सबसे ज़्यादा होता है जहां कम आयवर्ग के लोग ज़्यादा रहते हैं और राजनीतिक शक्तियां सबसे कम सक्रिय होती हैं। न्यायालय व नियंत्रण करने वाली एजेंसियां अक्सर इस बात से अपनी शक्तियों को तर्कसंगत साबित करने की कोशिश करते हैं।

पृष्ठभूमि

जिन देशों में कम्युनिस्ट यानी साम्यवादी सरकारों का शासन हैं जहां हर चीज़ पर सरकार का अधिकार होता है, वे पर्यावरण को प्रदूषित करने के मामले में दुनिया में सबसे आगे हैं। ये सरकारें अपनी जनता के स्वास्थ्य को ले कर पूरी तरह से लापरवाह होती हैं। लोकतांत्रिक देशों में भी प्रदूषण को रोकने के लिए सरकारी कोशिशें सफल नहीं रहीं। उदाहरण के लिए अमेरिका में उद्योगों के मुकाबले सीवेज सिस्टम से कई गुना ज़्यादा प्रदूषण होता है। सीवेज सिस्टम का नियंत्रण सरकारी एजेंसियां करती हैं।
अगर प्रदूषण रोकने और पर्यावरण की सुरक्षा का काम सरकार करेगी तो जाहिर है कि वह उसमें होने वाला खर्च आम जनता से कर के रूप में वसूलेगी। नागरिकों पर कर का बोझ डालने से अच्छा है कि जरूरी अधिकारों के साथ इन कामों की जिम्मेदारी जनता

को ही दे दी जाए। यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन पर अमल करके सरकार पर्यावरण की देखभाल ज़्यादा अच्छे तरीके से कर सकती है।

◦ सरकार किसी जगह पर रहने वाले स्थानीय नागरिकों को उनकी संपत्ति पर अधिकारों को मान्यता दे। अन्य सरकारी संपत्तियों का भी निजीकरण किया जाना चाहिए।
◦ अगर कोई नागरिक दूसरे लोगों के जीवन या उनकी संपत्ति को किसी तरह का नुकसान पहुंचा रहा है तो उसे इसकी सज़ा मिलनी चाहिए। उनके काम से दूसरों का कोई नुकसान न हो इसकी जिम्मेदारी नागरिकों की ही हो। उनके काम की वज़ह से न तो दूसरों की सीमा का उल्लंघन होना चाहिए न ही किसी तरह का प्रदूषण फैलना चाहिए।

◦ सरकार की कृपापात्र कंपनियों और समूहों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता या सब्सिडी हटा दी जाए। किसी तरह के संभावित नुकसान की भरपाई कैसे की जाय इसके लिए कंपनियों के साथ आपसी सहमति से शर्तें तय करने का अधिकार लोगों को दिया जाना चाहिए।

संदर्भ

मैरी रॉवार्ट ने अपनी किताब *हीलिंग अवर वर्ल्ड* के अध्याय डिस्ट्रॉइंग दि इनवॉयरमेंट में कहा है कि यह बिल्कुल व्यवहारिक सी बात है कि हम लोग पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति तभी ज़्यादा संवेदनशील और सक्रिय होते हैं जब उस पर हमारा किसी तरह का अधिकार होता है या उसकी देखभाल करने पर हमें सीधे तौर पर कोई फायदा होता है। यह पूरी किताब http://www.ruwart.com/pages/healing पर पढ़ी जा सकती है।

अ लिबर्टी प्राइमर में एलन बरिस के विचार भी इस मुद्दे पर रोशनी डालते हैं।

पर्यावरण नियंत्रण के विषय में और जानकारी के लिए कैटो इंस्टीट्यूट की साइट http://www.cato.org/research देखिए।

यह जानने के लिए कि मुक्त बाज़ार व्यवस्था और संपत्ति अधिकार किस तरह से पर्यावरण सुरक्षा में मददगार साबित होते हैं http://www.newenvironmentalism.org एक बहुत अच्छी साइट है। इसे रीजन फाउंडेशन संचालित करता है। पूरे विश्व के पर्यावरण की हालत का जायजा लेने के लिए बजॉर्न लोमबर्ग की लिखी *दि स्केप्टिकल इनवायरमेंटलिस्ट* एक बढ़िया किताब है।

बॉक्स 1

साझेदारी की दिक्कत ऐसी ही है जैसे कई सारे बच्चे एक ही बरतन में स्ट्रॉ डाल कर बुलबुलेदार शर्बत पी रहे हों जिसमें हर बच्चा बड़े से बड़ा बुलबुला बना कर फोड़ना चाहता है।
---------------अज्ञात

बॉक्स 2
सरकारी अधिकारियों के दांवपेंचों में उलझने की बजाय गरीब मछुआरा होना ज़्यादा अच्छा है।

--------------दात्तोन

बॉक्स 3
जिस चीज़ पर सबका अधिकार होता है उसकी देखभाल सबसे कम होती है क्योंकि सभी लोग साझा संपत्ति की बजाय अपनी निजी चीज़ों की कद्र अधिक करते हैं।
--------------- अरस्तू

बॉक्स 4
सरकार द्वारा बलप्रयोग करने से होने वाली परेशानियों को सुलझाया जा सकता है। सिर्फ इतना करना होगा कि   दुनिया भर के लोग सरकारी अधिकारियों से अपनी ओर से बल का प्रयोग करने के लिए कहना छोड़ दें।

--------जोनाथन गलिबल के मार्गदर्शक सिद्धांत से लिया गया अंश

बॉक्स 5
किसी भी आदमी ने कभी दूसरों की भलाई के लिए उन पर शासन नहीं किया।

----------जॉर्ज डी. हेरॉन